म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद का त्रैमासिक न्यूज लेटर

जैव प्रौद्योगिकी

छोटी सी चींटी बड़ा सा हाथी
डी.एन.ए. की श्रंखला
सबका साथी।

अंक 05 फरवरी-अप्रैल 2011

संपादकीय

जैव प्रौद्योगिकी जीव विज्ञान की वह विधा है जिससे विज्ञान के सिद्धान्तों एवं तकनीकी के संमिश्रण से इच्छित एवं नियंत्रित परिवर्तन संभव है। उपयोग के आधार पर जैव प्रौद्योगिकी को Red Biotechnology, White Biotechnology एवं Green Biotechnology में बांटा जा सकता है। Red Biotechnology से तात्पर्य है चिकित्सा के क्षेत्र में जैव प्रौद्योगिकी तकनीकों का उपयोग जैसे genomic manipulation से रोगों का निदान। White Biotechnology में जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग औद्योगिक (Industrial) क्षेत्रों जैसे जैविक खाद, कीटनाशकों आदि में किया जाता है। Green Biotechnology या हरित जैव प्रौद्योगिकी से आशय है जैव प्रौद्योगिकी के सिद्धान्तों का उपयोग उन्नत कृषि, अधिक पैदावार एवं संवहनीय कृषि हेतु करना, जैसे जीनान्तरित फसले (Genetically Modified Crops)।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावर्णीय असंतुलन के कारण कृषि में अनिश्चितता बढ़ती जा रही है। ऐसे में विश्व में बढ़ती जनसंख्या की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में हरित जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग से अनेक संभावनाएं खोजी जा सकती है। आधुनिक कृषि में जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग से जीनान्तरित फसलें जैसे Golden Rice, GM Maize, Bt Cotton जैसी कई फसलों का विकास किया गया है। हालांकि जीनान्तरित फसलों के फायदे एवं नुकसान दोनों पर मंथन किया जाना आवश्यक है। जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग से जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक समस्या पर भी कुछ हद तक नियंत्रण किया जा सकता है। आज जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में हरित जैव प्रौद्योगिकी की तकनीकों की सहायता से कृषि को संवहनीय एवं लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सकता है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी
म.प्र. जैव प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल

संरक्षक
श्री सेवाराम आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव
म.प्र. शासन
जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग

संपादक
श्री शैबाल दासगुप्ता आई.एफ.एस.
मुख्य कार्यपालन अधिकारी
मध्यप्रदेश जैव प्रौद्योगिकी परिषद,
भोपाल

सह संपादक
डॉ. एलिजाबेथ थॉमस
मध्यप्रदेश जैव प्रौद्योगिकी परिषद,
भोपाल

संपादक मंडल
श्री जैनेन्द्र कुमार जैन
डॉ. ए. बैनर्जी
कु. नेहा दुबे
कु. निशा रेलवानी

जीव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान

प्रदेश में जैव प्रौद्योगिकी विषय में उत्कृष्ट अध्ययन एवं शोध सुविधा उपलब्ध कराने की दृष्टि से जीव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान का भोपाल में निर्माण प्रस्तावित है। संस्थान का विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन (Detailed Project Report - DPR) तैयार करने हेतु परिषद स्तर से कन्सेप्ट डिजाईन एवं ''टर्म ऑफ रेफरेन्स'' के आधार पर सलाहकार के चयन हेतु खुली निविदा की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है। जिसके आधार पर म.प्र. शासन, जैव विविधता एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा मेसर्स महेन्द्रा कंसल्टिंग इंजीनियर्स लि., चैन्नई को डीपीआर तैयार करने हेतु सलाहकार नियुक्त किया गया है। सलाहकार द्वारा 8 माह की अवधि में कार्य पूर्ण किया जावेगा।